ङ्ग्रैंकङ्गट (जर्मनी)
जून ०६, १९९९

सन्देश संख्या ८

अस्तित्व सत् है न कि अनुभव

क्या बिना किसी विषय/कारण के कोई वासना/असंतोष हो सकता है? तब वहाँ कोई अहम्भाव नहीं रह जाता है। यही है उस अनाममय जिज्ञासा का उन्मोचन और केवल तभी उस आयाम के अनावृत्ति के सम्भावना की उत्पत्ति होती है जो कि निर्मनावस्था है जिसे पवित्र अन्तदृ र्ष्टि कहा जाता है।

अस्तित्व सत् है न कि अनुभव। अनुभव केवल जागतिक संदर्भों में मान्य एवम् उपयोगी है। आध्यात्मिक संदर्भों में मानसिक अनुभव/काल्पनिक जाल हमें मानसिक रूप से अपंग/विकृत बना देंगे।

अस्तित्व का प्रबोध अनुभव का उल्लास नहीं है। अनु□व एक पहचान है और समस्त पहचान पूर्व नियोजित प्रतिक्रियाओं से दूषित होते हैं। अपने विश्वासों और अनुभवों का निरीक्षण एवम् जाँच पड़ताल करें। चित्तवृत्ति की उस विरामहीन प्रवृत्ति को देखें जो स्वयं को निरन्तरता प्रदान करता रहता है। अनुभव सत् नहीं है। यह क्षणभंगुर है। सत् शाश्वत है। सत् शून्य में वह शक्ति है जिसमें समझदारी भी है। वह शून्यता आपके अन्दर पूर्णतया विद्यमान है। देह के अवसान के पूर्व उस शून्यता को चित्तवृत्ति के विषयों के प्रदूषण से मुक्त करें। द्रष्टाहीन दृष्टि का उद्घाटन करें। मन तथा काल के बंधन से मुक्ति ही सबसे बड़ी जागृति है।

शक्ति – चिति – इति
राधे – गोविन्द – जय